International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के धर्मान्तरण का औचित्य

डॉ. दुलारीराम मीना
व्याख्याता (राजनीति विज्ञान)
राजकीय महाविद्यालय, खण्डार

अम्बेडकर द्वारा धर्म परिवर्तन का निर्णय महज पूर्वाग्रहों से ही ग्रसित नहीं था। अपनी घोषणा के औचित्य को उन्होंने सिद्ध भी किया है, उनके अनुसार– ''हमने हिन्दू समाज में समानता प्राप्त करने का बहुत प्रयास किया, सत्याग्रह भी किये, किन्तु सब बेकार हुए। हिन्दू समाज में समानता के लिए कोई स्थान नहीं है। हिन्दू धर्म का त्याग करने से ही हमारी परिस्थिति में सुधार सम्भव है। अतः धर्मान्तरण के अलावा, हमार उद्दार का कोई दूसरा रास्ता नहीं है।[1]

30 मई 1936 को बम्बई में महार परिषद के विशाल अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए अम्बेडकर ने कहा कि–''यह अधिवेशन मैंने धर्मान्तरण की घोषणा पर विचार–विमर्श करने के उद्देश्य से आयोजित किया है। धर्मान्तरण का विषय जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही गहन भी है। फिर भी जब तक आप इसकी महत्ता समझ नही सकेगें तब तक इसकी वास्तविकता को परिवर्तित करना कठिन होगा। अतः अत्यन्त सहज और सरल तरीके से विषय का मण्डन करने का प्रयास कर रहा हूं।[2]

अम्बेडकर के विचार में अस्पृश्यता का प्रश्न वर्ग संघर्ष का प्रश्न है। स्पृश्य और अस्पृश्य इन दोनों समाजों में व्याप्त संघर्ष, एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग के साथ किये गये अत्याचार एवं अन्याय का प्रश्न है। यह वर्ग संघर्ष सामाजिकता से सम्बन्धित संघर्ष है। अस्पृश्य वरिष्ठ वर्ग से व्यवहार करते समय अपना व्यवहार कैसे रखें, इसका संघर्ष।[3] अम्बेडकर के अनुसार किसी भी संघर्ष में जिस के पास शक्ति होती है, वही विजयी होता है। किन्तु इस संघर्ष से मुक्त होने के लिए अस्पृश्यों के पा कोई शक्ति नहीं है। मनुष्यों के पास तीन प्रकार की शक्ति होती है।–प्रथम : शारीरिक बल, द्वितीय धन बल आर तृतीय मानसिक बल। शारीरिक बल की दृष्टि से अस्पृश्य अल्पसंख्यक हैं। आपसी जाति भेद के कारण उनमं संघर्षशक्ति का अभाव है। उनके पास धन बल का भी सर्वथा अभाव है। उनके पास व्यवसाय नहीं है। खेती नहीं है, नौकरी नहीं है, धन्धा नहीं है। मानसिक बल का भी सबसे अधिक अभाव है। सैंकड़ों वर्षो से सवर्ण वर्ग की सेवा चाकरी करने पर भी उनके द्वारा अस्पृश्यों की अवमानता की जाती रही है

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जिसे वे सहते आ रहे है, इससे उनमें प्रतिकार करने का साहस समाप्त हो गया है और इसके कारण निराशा का वातावरण सर्वत्र फैल चुका है।[4]

अम्बेडकर के अनुसार धर्म परिवर्तन कर किसी अन्य समाज में अन्तर्भूत हुए बिना उस समाज की शक्ति अस्पृश्यों को नहीं मिल सकती। जब तक उनके पास शक्ति नहीं है, तब तक उन्हें और उनके परिवार को दयनीय स्थिति में गुजारा करना पड़ेगा।

अम्बेडकर के अनुसार जिस धर्म में एक वर्ग को विद्याभ्यास करना, दूसरे को शस्त्र धारण करना, तीसरे को व्यापार करना और चौथे को केवल सेवा करना ऐसा कहा है। वह धर्म मुझे मान्य नहीं है। जो धर्म एक वर्ग को साक्षर और दूसरे को निरक्षर रखता है, वह धर्म बल्कि लोगों को बौद्धिक गुलामी में रखने का षड़यन्त्र है। जो धम को शस्त्र धारण करने को दूसरे को निःशस्त्र रहने को कहता है, वह एक के द्वारा दूसरे को गुलामी में रखने की युक्ति है। जो धर्म कुछ लोगों को धन प्राप्ति का मार्ग खुला करता है और कुछ लोगों को अपना जीवन दूसरों पर आश्रित रखने की अनुज्ञा देता है, वह धर्म नहीं बल्कि स्वार्थपरायणता है।[5]

अम्बेडकर के विचार में व्यक्ति विकास के लिए तीन चीजें चाहिए– भ्रातृत्व, समता और स्वतन्त्रता। हिन्दू धर्म में इन तीनों में से एक भी चीज अस्पृश्यों के लिए उपलब्ध नहीं है। ऐसी स्थिति में हिन्दू धर्म में अस्पृश्यों का उत्थान नहीं हो सकता।

अम्बेडकर के अनुसार भ्रातृत्व की दृष्टि से देखा जाए तो हिन्दू धर्म सर्वत्र शून्य हैं। सवर्णो की ओर से अस्पृश्यों को गैरों से भी गैर समझा जाता है। मुसलमानों से वे जितना स्नेहभाव रखते है, उतना अस्पृश्यों से नहीं रखते हैं। हिन्दू समाज में अस्पृश्यों क लिए समानता नहीं है। जितनी अस्पृश्यता हिन्दू समाज में है उतनी विश्व इतिहास में अन्यत्र कहीं नहीं मिल सकती। एक व्यक्ति को दूसरे को स्पर्श नहीं करना चाहिए, यह प्रथा हिन्दू समाज के अलावा अन्य कहीं नहीं है। अस्पृश्यता यह हिन्दू समाज पर कलंक है, ऐसा कुछ लोग कहते है किन्तु ये सब कहने की बातें है। हिन्दू धर्म कलंकित है ऐसा किसी ने नहीं कहा। अस्पृश्य कलंकित है, अपवित्रत है, ऐसा सभी सर्वण समाज की धारणा है। ऐसी स्थिति में इस कलंक को मिटाने का एक ही उपाय है और वह है हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज का त्याग करना। वे कहा करते थे– हिन्दू धर्म की बौद्धिक और व्यावहारिक गुलामी से मुक्त होने की अस्पृश्यों को जितनी आवश्यकता है, उतनी हिन्दुओं को नहीं है। इसलिए उन्हें यदि स्वतन्त्रता चाहिए तो धर्म परिवर्तन करना पड़ेगा।[6]

अम्बेडकर ने स्पष्ट किया है कि ''इसमें कोई सन्दे ह नहीं है हमारे पूर्वज प्राचीन हिन्दू धर्म को मानते थे किन्तु मैं यह नहीं स्वीकारता कि वे स्वेच्छा से हिन्दूइज्म के साथ बन्धे रहें।...

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

.....हिन्दू धर्म हमारे पूर्वजों का धर्म अवश्य था किन्तु इसमें बद्तर गुलामी थी, जो उन पर थोपी गई। हमारे पूर्वजो के पास इस गुलामी के विरूद्ध लड़ने के कोई साधन नहीं थे। इसलिए वे बगावत नहीं कर सकते थे। कोई भी व्यक्ति, वर्तमान पीढ़ी पर इस प्रकार की गुलामी नहीं लाद सकता, जब हमें सब तरह की आजादी है। यदि वर्तमान पीढ़ी ऐसी स्वतन्त्रता का लाभ उठाकर इस समय भी हिन्दुइज्म के चुंगल से आजाद नहीं होती तो यकीनी तौर पर उन्हें कायर कहा जाएगा और उसे ऐसे गुलाम लोगों के नाम से पुकारा जायेगा जो स्वाभिमान से वंचित हों।[7]

अम्बेडकर के अनुसार धर्मान्तरण के प्रश्न में नया क्या है? सही देखा जाये तो अस्पृश्यों और हिन्दुओं का सामाजिक सम्बन्ध क्या है? ईसाई और मुसलमानो के समान इनसे भी हिन्दुओं का रोटी–बेटी व्यवहार नहीं होता। इनका समाज और हिन्दुओं का समाज यह दो अलग समाज है। धर्मान्तरण से नया कुछ होने वाला नहीं। यह सही है तो धर्मान्तरण से कोई क्यों डर रहा है।

अम्बेडकर ने अस्पृश्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि– मैंने निश्चिय कर लिया है, कि, मैं धर्म परिवर्तन करूंगा। मेरा धर्म परिवर्तन किसी भी प्रकार के भौतिक लाभों के लिए नही है। मेरा धर्मान्तरण का मूल कारण आध्यात्मिक है। हिन्दु धर्म मेरी बुद्धि को स्वीकार नहीं है। मेरे स्वाभिमान के विरूद्ध है। आपको आध्यात्मिक और भौतिक दोनों लाभों के लिए धर्मान्तरण करना आवश्यक है।[8] अम्बेडकर के अनुसार कुछ लोग कहते है कि हम धर्म परिवर्तन से क्या प्राप्त करना चाहते हैं। उनके लिए उत्तर है कि भारत स्वराज से क्या प्राप्त करना चाहता है। जिस प्रकार भारत के लिए स्वराज आवश्यक है उसी प्रकार अछूतो के लिए धर्म परिवर्तन आवश्यक है। दोनों का एक ही उद्देश्य है और वह है स्वतन्त्रता।[9] अम्बेडकर के अनुसार मानवता की प्राप्ति के लिए धर्मान्तरण करना है। समता के लिए धर्मान्तरण करना है। सुखी संसार के लिए धर्मान्तरण करना है। जो धर्म हमारी चिन्ता करता हो, हम अवसर प्रदान करता हो, उसके लिए हम प्राण तक देने को तैयार है जो धर्म हमारी परवाह ही नही करता, उसकी परवाह हम क्यों करें।[10] हमें अवश्य ही धर्म परिवर्तन कर लेना चाहिए।

अम्बेडकर ने अस्पृश्यों को धर्म परिवर्तन के पक्ष में निम्न तर्क दिये[11]–

(1) धर्म इन्सान के लिये है, इन्सान धर्म के लिए नही है।

(2) यदि तुम स्वंय को संगठित करना चाहते हो, तो अपना धर्म बदलों।

(3) यदि तुम स्वाभिमान लाभ चाहते हो, तो अपना धर्म बदलों।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

(4) यदि तुम शक्ति और सत्ता प्राप्त करना चाहते हो, तो अपना धर्म बदलों।

(5) यदि तुम समता चाहते हो, तो अपना धर्म बदलो।

(6) यदि स्वतन्त्रता चाहते हो, तो अपना धर्म बदलों।

(7) यदि तुम संसार को जिसमें तुम रहते हो, सुखी बनाना चाहते हो तो अपना धर्म परिवर्तन करें।

(8) यदि तुम एसे समाज का निर्माण करना चाहते हो जो सहयोग और भ्रातृ त्व प्रदान करें तो अपना धर्म बदलो।

अम्बेडकर ने अस्पृश्यों को सावधान करते हुए यह भी कहा कि धर्मान्तरण घोषणा की सार्थकता समझे बिना किसी को भी धर्मान्तरण की घोषणा नहीं करनी चाहिए। वास्तव में वे नहीं जानते थे कि धर्मान्तरण को लेकर किसी के मन में कोई शंका रहे।

महार परिषद में अम्बेडकर द्वारा दिये गये भाषण का गम्भीर प्रभाव पड़ा। अम्बेडकर के भाषण के पश्चात् इस परिषद ने सामुदायिक धर्मान्तरण का प्रस्ताव पारित किया। जिसके अनुसार हिन्दू देवताओं की अर्चना बन्द करने, हिन्दू त्यौहारों को नहीं मानने, हिन्दू तीर्थक्षेत्र में न जाने का तथा ऐसे धर्म जिसमें सामाजिक और धार्मिक समानता हो को अपनाने का अस्पृश्य वर्ग को आह्वान किया।[12] परिषद में दिये गये इस भाषण के साथ ही अब यह पूरी तरह से स्पष्ट हो गया कि अम्बेडकर अपने अनुयायियों सहित धर्म परिवर्तन के लिए दृढ़ संकल्प है।

संदर्भः–

1. कंवल भारतीः डॉ. अम्बेडकर बौद्ध क्यों बने, 1983, प. 53–54
2. डा. म.ला. शहारे, डा. नलिनी अनिलः डा. बाबा साहेब अम्बेडकर की संघर्ष यात्रा एवं सन्देश 1993 पृ. 164
3. धनंजय कीर : डा. अम्बेडकर लाईफ एण्ड मिशन, 1991, पृ. 273
4. ''वही'' पृ. 273–74
5. धनंजय कीर : डा. अम्बेडकर लाईफ एण्ड मिशन, 1991, पृ. 274
6. डा. म.ला. शहारे, डा. नलिनी अनिलः डा. बाबा साहेब अम्बेडकर की संघर्ष यात्रा एवं सन्देश 1993 पृ. 168
7. भगवानदास (सम्पा.) दस स्पोक अम्बेडकर खण्ड–4, 1980, पृ. 42–43
8. धनंजय कीर : डा. अम्बेडकर लाईफ एण्ड मिशन, 1991, पृ. 274
9. ''वही'' पृ. 274
10. डा. सूर्य नारायण रणसुभे : डा. बाबा साहेब अम्बेडकर 1992, पृ. 88
11. भगवानदास (सम्पा.) दस स्पोक अम्बेडकर खण्ड–4, 1980, पृ. 61
12. वसंत मून : डा. बाबा साहब अम्बेडकर 1991, पृ. 87